

Para 10

Sipara 10 of 30 · 127 Ayahs · Translation: Hindi

Al-Anfaal

41

وَأَعْلَمُوا؟ أَنَّمَا غَنِمْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ؟ فَإِنَّ لِلَّهِ خُمُسَهُ؟ وَلِلرَّسُولِ وَلِذِي الْقُرْبَىٰ
وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينِ وَأَبْنِ السَّبِيلِ إِن كُنْتُمْ ءَامَنْتُمْ بِاللَّهِ وَمَا أُنْزِلْنَا عَلَىٰ عَبْدِنَا يَوْمَ
الْفُرْقَانِ يَوْمَ التَّقَىٰ الْجَمْعَانِ؟ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

और जान लो कि जो कुछ तुम (माल लड़कर) लूटो तो उनमें का पाँचवाँ हिस्सा मखसूस खुदा और रसूल और (रसूल के) कराबतदारों और यतीमों और मस्कीनों और परदेसियों का है अगर तुम खुदा पर और उस (गैबी इमदाद) पर ईमान ला चुके हो जो हमने खास बन्दे (मोहम्मद) पर फ़ैसले के दिन (जंग बदर में) नाज़िल की थी जिस दिन (मुसलमानों और काफ़िरों की) दो जमाअतें बाहम गुथ गयी थी और खुदा तो हर चीज़ पर कादिर है

42

إِذْ أَنْتُمْ بِالْعُدُوِّ الدُّنْيَا وَهُمْ بِالْعُدُوِّ الْقُصْوَىٰ وَالرَّكْبُ أَسْفَلَ مِنْكُمْ؟ وَلَوْ تَوَاعَدْتُمْ
لَاخْتَلَفْتُمْ فِي الْمِيعَدِ؟ وَلَكِن لِّيَقْضِيَ اللَّهُ أَمْرًا؟ كَانَ مَفْعُولًا؟ لِيَهْلِكَ مَنْ هَلَكَ
عَنْ بَيْنَةٍ؟ وَيَحْيَىٰ مَنْ حَيَّ عَنْ بَيْنَةٍ؟ وَإِنَّ اللَّهَ لَسَمِيعٌ عَلِيمٌ

(ये वह वक्त था) जब तुम (मैदाने जंग में मदीने के) करीब नाके पर थे और वह कुफ़्फ़ार बईद (दूर के) के नाके पर और (काफ़िले के) सवार तुम से नशेब में थे और अगर तुम एक दूसरे से (वक्त क़ी तक़रीर का) वायदा कर लेते हो तो और वक्त पर गड़बड़ कर देते मगर (खुदा ने अचानक तुम लोगों को इकट्ठा कर दिया ताकि जो बात यदनी (होनी) थी वह पूरी कर दिखाए ताकि जो शख्स हलाक (गुमराह) हो वह (हक़ की) हुज्जत तमाम होने के बाद हलाक हो और जो ज़िन्दा रहे वह हिदायत की हुज्जत तमाम होने के बाद ज़िन्दा रहे और खुदा यक़ीनी सुनने वाला ख़बरदार है

43

إِذْ يُرِيكَهُمُ اللَّهُ فِي مَنَاكَ قَلِيلًا؟ وَلَوْ أَرَاكَهُمْ كَثِيرًا؟ لَفَشِلْتُمْ وَلَتَنْزَعْتُمْ فِي الْأَمْرِ
وَلَكِنَّ اللَّهَ سَلَّمَ إِنَّهُ؟ عَلِيمٌ؟ بِذَاتِ الصُّدُورِ

(ये वह वक्त था) जब खुदा ने तुम्हें ख़्वाब में कुफ़्फ़ार को कम करके दिखलाया था और अगर उनको तुम्हें ज्यादा करते दिखलाता तुम यक़ीनन हिम्मत हार देते और लड़ाई के बारे में झगड़ने लगते मगर खुदा ने इसे (बदनामी) से बचाया इसमें तो शक़ ही नहीं कि वह दिली ख़्यालात से वाक़िफ़ है

وَإِذْ يُرِيكُمُوهُمْ إِذِ الْتَقَيْتُمْ فِيَ أَعْيُنِكُمْ قَلِيلًا ۖ وَيُقَلِّلُكُمْ فِيَ أَعْيُنِهِمْ لِيَقْضِيَ اللَّهُ أَمْرًا ۖ
كَانَ مَفْعُولًا ۖ ۚ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ

(ये वह वक्त था) जब तुम लोगों ने मुठभेड़ की तो खुदा ने तुम्हारी आँखों में कुफ़्फ़ार को बहुत कम करके दिखलाया और उनकी आँखों में तुमको थोड़ा कर दिया ताकि खुदा को जो कुछ करना मंज़ूर था वह पूरा हो जाए और कुल बातों का दारोमदार तो खुदा ही पर है

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۖ إِذَا لَقِيتُمْ فِئَةً ۖ فَاثْبُتُوا ۖ وَانْكُرُوا ۖ اللَّهُ كَثِيرٌ ۖ لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ

ऐ ईमानदारों जब तुम किसी फौज से मुठभेड़ करो तो खबरदार अपने क़दम जमाए रहो और खुदा को बहुत याद करते रहो ताकि तुम फ़लाह पाओ

وَأَطِيعُوا ۖ اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۖ وَلَا تَنَازَعُوا ۖ فَتَفْشَلُوا ۖ وَتَذْهَبَ رِيحُكُمْ ۖ وَأَصْبِرُوا ۖ ۚ إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ

और खुदा की और उसके रसूल की इताअत करो और आपस में झगड़ा न करो वरना तुम हिम्मत हारोगे और तुम्हारी हवा उखड़ जाएगी और (जंग की तकलीफ़ को) झेल जाओ (क्योंकि) खुदा तो यक़ीनन सब्र करने वालों का साथी है

وَلَا تَكُونُوا ۖ كَالَّذِينَ خَرَجُوا ۖ مِنْ دِيَارِهِمْ بِطَرٍّ ۖ ۚ وَرِئَاءَ النَّاسِ وَيَصُدُّونَ عَن
سَبِيلِ اللَّهِ ۖ ۚ وَاللَّهُ بِمَا يَعْمَلُونَ مُحِيطٌ ۖ

और उन लोगों के ऐसे न हो जाओ जो इतराते हुए और लोगों के दिखलाने के वास्ते अपने घरों से निकल खड़े हुए और लोगों को खुदा की राह से रोकते हैं और जो कुछ भी वह लोग करते हैं खुदा उस पर (हर तरह से) अहाता किए हुए है

وَإِذْ زَيْنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ أَعْمَلُهُمْ وَقَالَ لَا غَالِبَ لَكُمْ الْيَوْمَ مِنَ النَّاسِ وَإِنِّي جَارٌ لَّكُمْ ۚ فَلَمَّا تَرَآتِ الْفِتْنَانَ نَكَصَ عَلَىٰ عَقْبَيْهِ وَقَالَ إِنِّي بَرِيءٌ ۚ مِّنْكُمْ إِنِّي أَرَىٰ مَا لَا تَرَوْنَ إِنِّي أَخَافُ اللَّهَ ۚ وَاللَّهُ شَدِيدُ الْعِقَابِ

और जब शैतान ने उनकी कारस्तानियों को उम्दा कर दिखाया और उनके कान में फूँक दिया कि लोगों में आज कोई ऐसा नहीं जो तुम पर ग़ालिब आ सके और मैं तुम्हारा मददगार हूँ फिर जब दोनों लश्कर मुकाबिल हुए तो अपने उलटे पाँव भाग निकला और कहने लगा कि मैं तो तुम से अलग हूँ मैं वह चीज़ें देख रहा हूँ जो तुम्हें नहीं सूझती मैं तो खुदा से डरता हूँ और खुदा बहुत सख्त अज़ाब वाला है

إِذْ يَقُولُ الْمُنْفِقُونَ وَالَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ غَرَّ هَوَاءٌ دِينُهُمْ ۚ وَمَن يَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ فَإِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۚ

(ये वक्त था) जब मुनाफ़िक़ीन और जिन लोगों के दिल में (कुफ़्र का) मर्ज़ है कह रहे थे कि उन मुसलमानों को उनके दीन ने धोके में डाल रखा है (कि इतराते फिरते हैं हालाँकि जो शख्स खुदा पर भरोसा करता है (वह ग़ालिब रहता है क्योंकि) खुदा तो यकीनन ग़ालिब और हिकमत वाला है

وَلَوْ تَرَىٰ إِذْ يَتَوَفَّى الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ أَلْمَلِكَةُ يَضْرِبُونَ وُجُوهَهُمْ وَأَدْبَرَهُمْ وَذُوقُوا ۚ عَذَابَ الْحَرِيقِ

और काश (ऐ रसूल) तुम देखते जब फ़रिश्ते काफ़िरों की जान निकाल लेते थे और रूख़ और पुश्त (पीठ) पर कोड़े मारते थे और (कहते थे कि) अज़ाब जहन्नुम के मज़े चखें

ذَٰلِكَ بِمَا قَدَّمْتُمْ أَيْدِيكُمْ وَأَنَّ اللَّهَ لَيْسَ بِظَلَمٍ ۚ لِلْعَبِيدِ

ये सज़ा उसकी है जो तुम्हारे हाथों ने पहले किया कराया है और खुदा बन्दों पर हरगिज़ जुल्म नहीं किया करता है

كَذَّابٍ ءَالٍ فِرْعَوْنَ ۚ وَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ كَفَرُوا ۚ بِآيَاتِ اللَّهِ فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ بِذُنُوبِهِمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ قَوِيٌّ شَدِيدُ الْعِقَابِ

(उन लोगों की हालत) क्रौमे फिरऔन और उनके लोगों की सी है जो उन से पहले थे और खुदा की आयतों से इन्कार करते थे तो खुदा ने भी उनके गुनाहों की वजह से उन्हें ले डाला बेशक खुदा ज़बरदस्त और बहुत सख्त अज़ाब देने वाला है

ذَلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ لَمْ يَكُ مُغَيِّرًا نِعْمَةً أَنْعَمَهَا عَلَىٰ قَوْمٍ حَتَّىٰ يُغَيِّرُوا ۚ مَا بِأَنْفُسِهِمْ ۚ وَأَنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۚ

ये सज़ा इस वजह से (दी गई) कि जब कोई नेअमत खुदा किसी क्रौम को देता है तो जब तक कि वह लोग खुद अपनी कलबी हालत (न) बदलें खुदा भी उसे नहीं बदलेगा और खुदा तो यक़ीनी (सब की सुनता) और सब कुछ जानता है

كَذَّابٍ ءَالٍ فِرْعَوْنَ ۚ وَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ كَذَّبُوا ۚ بِآيَاتِ رَبِّهِمْ فَأَهْلَكْنَاهُمْ بِذُنُوبِهِمْ وَأَغْرَقْنَا ءَالَ فِرْعَوْنَ ۚ وَكُلٌّ ۚ كَانُوا ۚ ظَالِمِينَ

(उन लोगों की हालत) क्रौम फिरऔन और उन लोगों की सी है जो उनसे पहले थे और अपने परवरदिगार की आयतों को झुठलाते थे तो हमने भी उनके गुनाहों की वजह से उनको हलाक कर डाला और फिरऔन की क्रौम को डुबा मारा और (ये) सब के सब ज़ालिम थे

إِنَّ شَرَّ الدَّوَابِّ عِنْدَ اللَّهِ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ

इसमें शक़ नहीं कि खुदा के नज़दीक जानवरों में कुफ़्फ़ार सबसे बदतरीन तो (बावजूद इसके) फिर ईमान नहीं लाते

الَّذِينَ عٰهَدَتْ مِنْهُمْ ثُمَّ يَنْقُضُونَ عَهْدَهُمْ فِي كُلِّ مَرَّةٍ ۚ وَهُمْ لَا يَتَّقُونَ

ऐ रसूल जिन लोगों से तुम ने एहद व पैमान किया था फिर वह लोग अपने एहद को हर बार तोड़ डालते हैं और (फिर खुदा से) नहीं डरते

فَإِمَّا تَثَقَّفْنَهُمْ فِي الْحَرْبِ فَشَرِّدْ بِهِمْ مِّنْ خَلْفُهُمْ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُونَ

तो अगर वह लड़ाई में तुम्हारे हाथे चढ़ जाएँ तो (ऐसी सख्त गोशमाली दो कि) उनके साथ साथ उन लोगों का तो अगर वह लड़ाई में तुम्हारे हथ्थे चढ़ जाएँ तो (ऐसी सजा दो की) उनके साथ उन लोगों को भी तितरि बितर कर दो जो उन के पुश्त पर हो ताकि ये इबरत हासिल करें

وَإِمَّا تَخَافَنَّ مِنْ قَوْمٍ خِيَانَةً ۖ فَأَنْذِرْهُمْ عَلَىٰ سَوَاءٍ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْخَائِنِينَ

और अगर तुम्हें किसी क्रौम की ख्यानत (एहद शिकनी(वादा खिलाफी)) का खौफ हो तो तुम भी बराबर उनका एहद उन्हीं की तरफ से फेंक मारो (एहदो शिकन के साथ एहद शिकनी करो खुदा हरगिज़ दगाबाजों को दोस्त नहीं रखता

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ سَبَقُوا ۚ إِنَّهُمْ لَا يُعْجِزُونَ

और कुफ़ार ये न ख्याल करें कि वह (मुसलमानों से) आगे बढ़ निकले (क्योंकि) वह हरगिज़ (मुसलमानों को) हरा नहीं सकते

وَأَعِدُّوا ۚ لَهُمْ مَا اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ قُوَّةٍ ۚ وَمِنْ رِّبَاطِ الْخَيْلِ تُرْهِبُونَ بِهِ ۚ عَدُوَّ اللَّهِ

وَعَدُوَّكُمْ وَأَخْرَيْنَ مِنْ دُونِهِمْ لَا تَعْلَمُونَهُمُ اللَّهُ يَعْلَمُهُمْ ۚ وَمَا تُنْفِقُوا ۚ مِنْ شَيْءٍ ۚ

فِي سَبِيلِ اللَّهِ يُوفَّ إِلَيْكُمْ وَأَنْتُمْ لَا تُظْلَمُونَ

और (मुसलमानों तुम कुफ़ार के मुकाबले के) वास्ते जहाँ तक तुमसे हो सके (अपने बाज़ू के) ज़ोर से और बँधे हुए घोड़े से लड़ाई का सामान मुहय्या करो इससे खुदा के दुश्मन और अपने दुश्मन और उसके सिवा दूसरे लोगों पर भी अपनी धाक बढ़ा लेंगे जिन्हें तुम नहीं जानते हो मगर खुदा तो उनको जानता है और खुदा की राह में तुम जो कुछ भी खर्च करोगें वह तुम पूरा पूरा भर पाओगें और तुम पर किसी तरह ज़ुल्म नहीं किया जाएगा

ۚ وَإِنْ جَنَحُوا ۚ لِلسَّلَامِ فَاجْنَحْ لَهَا وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۚ إِنَّهُ ۚ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ

और अगर ये कुफ़ार सुलह की तरफ माएल हो तो तुम भी उसकी तरफ माएल हो और खुदा पर भरोसा रखो (क्योंकि) वह बेशक (सब कुछ) सुनता जानता है

وَإِنْ يُرِيدُوا ۚ أَنْ يَخْدَعُوكَ فَإِنَّ حَسْبَكَ اللَّهُ ۚ هُوَ الَّذِي أَيْدَكَ بِنَصْرِهِ ۚ
وَبِالْمُؤْمِنِينَ

और अगर वह लोग तुम्हें फरेब देना चाहे तो (कुछ परवा नहीं) खुदा तुम्हारे वास्ते यकीनी काफी है-(ऐ रसूल) वही तो वह (खुदा) है जिसने अपनी खास मदद और मोमिनीन से तुम्हारी ताईद की

وَأَلْفَ بَيْنَ قُلُوبِهِمْ ۚ لَوْ أَنْفَقْتَ مَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا ۚ مَا أَلْفَتَ بَيْنَ قُلُوبِهِمْ وَلَكِنَّ
اللَّهَ أَلْفَ بَيْنَهُمْ ۚ إِنَّهُ ۚ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۚ

और उसी ने उन मुसलमानों के दिलों में बाहम ऐसी उलफ़त पैदा कर दी कि अगर तुम जो कुछ ज़मीन में है सब का सब खर्च कर डालते तो भी उनके दिलों में ऐसी उलफ़त पैदा न कर सकते मगर खुदा ही था जिसने बाहम उलफ़त पैदा की बेशक वह ज़बरदस्त हिक्मत वाला है

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ حَسْبُكَ اللَّهُ وَمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ

ऐ रसूल तुमको बस खुदा और जो मोमिनीन तुम्हारे ताबेए फरमान (फरमाबरदार) है काफी है

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ حَرِّضِ الْمُؤْمِنِينَ عَلَى الْقِتَالِ ۚ إِنْ يَكُنْ مِنْكُمْ عِشْرُونَ صَابِرُونَ
يَغْلِبُوا ۚ مَا ۚ تَتَيْنِ ۚ وَإِنْ يَكُنْ مِنْكُمْ مَا ۚ نَّةٌ ۚ يَغْلِبُوا ۚ أَلْفًا ۚ مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ
بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ ۚ لَا يَفْقَهُونَ

ऐ रसूल तुम मोमिनीन को जिहाद के वास्ते आमादा करो (वह घबराए नहीं खुदा उनसे वायदा करता है कि) अगर तुम लोगों में के साबित क़दम रहने वाले बीस भी होंगे तो वह दो सौ (काफ़िरों) पर ग़ालिब आ जायेगे और अगर तुम लोगों में से साबित कदम रहने वालों सौ होंगे तो हज़ार (काफ़िरों) पर ग़ालिब आ जाएँगे इस सबब से कि ये लोग ना समझ हैं

أَلَنْ خَفَّفَ اللَّهُ عَنْكُمْ وَعَلِمَ أَنَّ فِيكُمْ ضَعْفًا؟ فَإِنْ يَكُنْ مِنْكُمْ مَا تُنْتَهُ؟ صَابِرَةً؟
يَغْلِبُوا؟ مَا تُتَيْنَ؟ وَإِنْ يَكُنْ مِنْكُمْ أَلْفٌ؟ يَغْلِبُوا؟ أَلْفَيْنِ بِإِذْنِ اللَّهِ؟ وَاللَّهُ مَعَ
الصَّابِرِينَ

अब खुदा ने तुम से (अपने हुक्म की सख्ती में) तरफ़ीफ (कमी) कर दी और देख लिया कि तुम में यकीनन कमज़ोरी है तो अगर तुम लोगों में से साबित क़दम रहने वाले सौ होंगे तो दो सौ (काफ़िरों) पर ग़ालिब रहेंगे और अगर तुम लोगों में से (ऐसे) एक हज़ार होंगे तो खुदा के हुक्म से दो हज़ार (काफ़िरों) पर ग़ालिब रहेंगे और (जंग की तकलीफों को) झेल जाने वालों का खुदा साथी है

مَا كَانَ لِنَبِيٍّ أَنْ يَكُونَ لَهُ؟ أَسْرَىٰ حَتَّىٰ يُثْخِنَ فِي الْأَرْضِ؟ تُرِيدُونَ عَرَصَ الدُّنْيَا
وَاللَّهُ يُرِيدُ آلَاءَ آخِرَةٍ؟ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ؟

कोई नबी जब कि रूए ज़मीन पर (काफ़िरों का) खून न बहाए उसके यहाँ कैदियों का रहना मुनासिब नहीं तुम लोग तो दुनिया के साज़ो सामान के ख्वाहों (चाहने वाले) हो और खुदा (तुम्हारे लिए) आखिरत की (भलाई) का ख्वाहों है और खुदा ज़बरदस्त हिक्मत वाला है

لَوْلَا كِتَابٌ؟ مِّنَ اللَّهِ سَبَقَ لَمَسَّكُمْ فِيمَا أَخَذْتُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ؟

और अगर खुदा की तरफ से पहले ही (उसकी) माफी का हुक्म आ चुका होता तो तुमने जो (बदर के कैदियों के छोड़ देने के बदले) फिदिया लिया था

فَكُلُوا؟ مِمَّا غَنِمْتُمْ حَلَالًا؟ طَيِّبًا؟ وَاتَّقُوا؟ اللَّهَ؟ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ؟

उसकी सज़ा में तुम पर बड़ा अज़ाब नाज़िल होकर रहता तो (ख़ैर जो हुआ सो हुआ) अब तुमने जो माल ग़नीमत हासिल किया है उसे खाओ (और तुम्हारे लिए) हलाल तय्यब है और खुदा से डरते रहो बेशक खुदा बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّمَنْ فِي أَيْدِيكُمْ مِّنَ الْأَسْرَىٰ إِن يَعْلَمِ اللَّهُ فِي قُلُوبِكُمْ خَيْرًا؟ يُؤْتِكُمْ
خَيْرًا؟ مِّمَّا أَخَذَ مِنْكُمْ وَيَغْفِرَ لَكُمْ؟ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ؟

ऐ रसूल जो कैदी तुम्हारे कब्जे में है उनसे कह दो कि अगर तुम्हारे दिलों में नेकी देखेगा तो जो (माल) तुम से छीन लिया गया है उससे कहीं बेहतर तुम्हें अता फरमाएगा और तुम्हें बख़्श भी देगा और खुदा तो बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है

وَإِنْ يُرِيدُوا ۚ خِيَانَتَكَ فَقَدْ خَانُوا ۚ اللَّهُ مِنْ قَبْلُ فَأَمَكَ مِنْهُمْ ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ

और अगर ये लोग तुमसे फरेब करना चाहते हैं तो खुदा से पहले ही फरेब कर चुके हैं तो (उसकी सज़ा में) खुदा ने उन पर तुम्हें क़ाबू दे दिया और खुदा तो बड़ा वाक़िफ़कार हिकमत वाला है

إِنَّ الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ وَهَاجَرُوا ۚ وَجَاهَدُوا ۚ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ ءَاوَوْا ۚ وَنَصَرُوا ۚ أُو۟لَئِكَ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ ۚ وَالَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ وَلَمْ يَهَاجِرُوا ۚ مَا لَكُمْ مِّنْ وَلِيَّتِهِم مِّن شَيْءٍ حَتَّىٰ يُهَاجِرُوا ۚ ۚ وَإِنِ اسْتَنْصَرُوكُمْ فِي الدِّينِ فَعَلَيْكُمُ النَّصْرُ إِلَّا عَلَىٰ قَوْمٍ ۚ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِّثْقٌ ۚ ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۚ

जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया और हिजरत की और अपने अपने जान माल से खुदा की राह में ज़िहाद किया और जिन लोगों ने (हिजरत करने वालों को जगह दी और हर (तरह) उनकी ख़बर गीरी (मदद) की यही लोग एक दूसरे के (बाहम) सरपरस्त दोस्त हैं और जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया और हिजरत नहीं की तो तुम लोगों को उनकी सरपरस्ती से कुछ सरोकार नहीं-यहाँ तक कि वह हिजरत एख्तियार करें और (हाँ) मगर दीनी अम्र में तुम से मदद के ख्वाहों हो तो तुम पर (उनकी मदद करना लाज़िम व वाज़िब है मगर उन लोगों के मुक़ाबले में (नहीं) जिनमें और तुममें बाहम (सुलह का) एहदो पैमान है और जो कुछ तुम करते हो खुदा (सबको) देख रहा है

وَالَّذِينَ كَفَرُوا ۚ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ ۚ إِلَّا تَفْعَلُوهُ تَكُن فِتْنَةٌ ۚ فِي الْأَرْضِ وَفَسَادٌ ۚ كَبِيرٌ ۚ

और जो लोग काफ़िर हैं वह भी (बाहम) एक दूसरे के सरपरस्त हैं अगर तुम (इस तरह) वायदा न करोगे तो रूए ज़मीन पर फ़ितना (फ़साद) बरपा हो जाएगा और बड़ा फ़साद होगा

وَالَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ وَهَاجَرُوا ۚ وَجَاهَدُوا ۚ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ ءَاوَوْا ۚ وَنَصَرُوا ۚ أُو۟لَئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُونَ حَقًّا ۚ ۚ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ ۚ وَرِزْقٌ ۚ كَرِيمٌ ۚ

और जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया और हिजरत की और खुदा की राह में लड़े भिड़े और जिन लोगों ने (ऐसे नाज़ुक वक़्त में मुहाजिरीन को जगह दी और उनकी हर तरह ख़बरगीरी (मदद) की यही लोग सच्चे ईमानदार हैं उन्हीं के वास्ते मग़फ़िरत और इज़्ज़त व आबरु वाली रोज़ी है

وَالَّذِينَ ءَامَنُوا ۖ مِنْ ۙ بَعْدُ وَهَاجَرُوا ۖ وَجَاهَدُوا ۖ مَعَكُمْ فَأُولَٰئِكَ مِنْكُمْ ۖ
 وَأُولَٰئِكَ ۖ أُولَٰئِكَ ۖ الْأَرْحَامُ بَعْضُهُمْ أَوْلَىٰ بِبَعْضٍ ۖ فِي كِتَابِ اللَّهِ ۖ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ
 عَلِيمٌ ۖ

और जिन लोगों ने (सुलह हुदैबिया के) बाद ईमान कुबूल किया और हिजरत की और तुम्हारे साथ मिलकर जिहाद किया वह लोग भी तुम्हीं में से हैं और साहबाने कराबत खुदा की किताब में बाहम एक दूसरे के (बनिस्बत औरों के) ज्यादा हकदार हैं बेशक खुदा हर चीज़ से खूब वाकिफ हैं

At-Tawba

1

بَرَاءَةٌ ۖ مِنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ ۖ إِلَى الَّذِينَ عَاهَدْتُمْ مِنَ الْمُشْرِكِينَ

(ऐ मुसलमानों) जिन मुशरिकों से तुम लोगों ने सुलह का एहद किया था अब खुदा और उसके रसूल की तरफ से उनसे (एक दम) बेज़ारी है

2

فَسِيحُوا ۖ فِي الْأَرْضِ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ ۖ وَاعْلَمُوا ۖ أَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِي اللَّهِ ۖ وَأَنَّ اللَّهَ
 مُخْزِي الْكَافِرِينَ

तो (ऐ मुशरिकों) बस तुम चार महीने (ज़ीकादा, जिल हिज्जा, मुहर्रम रजब) तो (चैन से बेखतर) रूए ज़मीन में सैरो सियाहत (घूम फिर) कर लो और ये समझते रहे कि तुम (किसी तरह) खुदा को आजिज़ नहीं कर सकते और ये भी कि खुदा काफ़िरो को ज़रूर रूस्वा करके रहेगा

3

وَأَذِّنْ ۖ مِنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ ۖ إِلَى النَّاسِ يَوْمَ الْحَجِّ الْأَكْبَرِ أَنَّ اللَّهَ بَرِيءٌ ۖ مِنَ
 الْمُشْرِكِينَ ۖ وَرَسُولُهُ ۖ فَإِنْ تُبْتُمْ فَهُوَ خَيْرٌ ۖ لَكُمْ ۖ وَإِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَأَعْلَمُوا ۖ أَنَّكُمْ
 غَيْرُ مُعْجِزِي اللَّهِ ۖ وَيَشِرَّ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ

और खुदा और उसके रसूल की तरफ से हज अकबर के दिन (तुम) लोगों को मुनादी की जाती है कि खुदा और उसका रसूल मुशरिकों से बेज़ार (और अलग) है तो (मुशरिकों) अगर तुम लोगों ने (अब भी) तौबा की तो तुम्हारे हक में यही बेहतर है और अगर तुम लोगों ने (इससे भी) मुंह मोड़ा तो समझ लो कि तुम लोग खुदा को हरगिज़ आजिज़ नहीं कर सकते और जिन लोगों ने कुफ़र इस्तेयार किया उनको दर्दनाक अज़ाब की खुश ख़बरी दे दो

4

إِلَّا الَّذِينَ عَاهَدْتُمْ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ثُمَّ لَمْ يَنْقُصُوكُمْ شَيْئًا ۖ وَلَمْ يُظَاهِرُوا ۚ عَلَيْكُمْ
أَحَدًا ۚ فَأَتِمُّوا ۚ إِلَيْهِمْ عَهْدَهُمْ إِلَىٰ مُدَّتِهِمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ

मगर (हाँ) जिन मुशरिकों से तुमने एहदो पैमान किया था फिर उन लोगों ने भी कभी कुछ तुमसे (वफ़ा एहद में) कमी नहीं की और न तुम्हारे मुकाबले में किसी की मदद की हो तो उनके एहद व पैमान को जितनी मुद्दत के वास्ते मुक़रर किया है पूरा कर दो खुदा परहेज़गारों को यकीनन दोस्त रखता है

5

فَإِذَا أَنْسَلَخَ الْأَشْهُرَ الْحُرُمَ فَاقْتُلُوا ۚ الْمُشْرِكِينَ حَيْثُ وَجَدْتُمُوهُمْ وَخُذُوهُمْ
وَأَحْصِرُوهُمْ وَأَقْعُدُوا ۚ لَهُمْ كُلٌّ مَرْصِدٍ ۚ فَإِنْ تَابُوا ۚ وَأَقَامُوا ۚ الصَّلَاةَ
وَأَتَوْا ۚ الزَّكَاةَ فَخَلُّوا ۚ سَبِيلَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ ۚ رَحِيمٌ ۚ

फिर जब हुरमत के चार महीने गुज़र जाएँ तो मुशरिकों को जहाँ पाओ (बे ताम्मुल) कत्ल करो और उनको गिरफ्तार कर लो और उनको कैद करो और हर घात की जगह में उनकी ताक में बैटो फिर अगर वह लोग (अब भी शिर्क से) बाज़ आएँ और नमाज़ पढ़ने लगेँ और ज़कात दे तो उनकी राह छोड़ दो (उनसे ताअरूज़ न करो) बेशक खुदा बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है

6

وَإِنْ أَحَدٌ ۚ مِنَ الْمُشْرِكِينَ اسْتَجَارَكَ فَأَجِرْهُ حَتَّىٰ يَسْمَعَ كَلِمَ اللَّهِ ثُمَّ أَبْلِغْهُ
مَأْمَنَهُ ۚ ۚ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ ۚ لَا يَعْلَمُونَ

और (ऐ रसूल) अगर मुशरिकीन में से कोई तुमसे पनाह मागें तो उसको पनाह दो यहाँ तक कि वह खुदा का कलाम सुन ले फिर उसे उसकी अमन की जगह वापस पहुँचा दो ये इस वजह से कि ये लोग नादान हैं

7

كَيْفَ يَكُونُ لِلْمُشْرِكِينَ عَهْدٌ عِنْدَ اللَّهِ وَعِنْدَ رَسُولِهِ ۚ إِلَّا الَّذِينَ عَاهَدْتُمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ
الْحَرَامِ ۚ فَمَا اسْتَقِيمُوا ۚ لَكُمْ فَاسْتَقِيمُوا ۚ لَهُمْ ۚ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ

(जब) मुशरिकीन ने खुद एहद शिकनी (तोड़ा) की तो उन का कोई एहदो पैमान खुदा के नज़दीक और उसके रसूल के नज़दीक क्योंकर (क्रायम) रह सकता है मगर जिन लोगों से तुमने खानाए काबा के पास मुआहेदा किया था तो वह लोग (अपनी एहदो पैमान) तुमसे क्रायम रखना चाहें तो तुम भी उन से (अपना एहद) क्रायम रखो बेशक खुदा (बद एहदी से) परहेज़ करने वालों को दोस्त रखता है

8

كَيْفَ وَإِنْ يَظْهَرُوا ۚ عَلَيْكُمْ لَا يَرْقُبُوا ۚ فِيكُمْ إِلَّا ۚ وَلَا ذِمَّةً ۚ ۚ يَرْضَوْنَكُمْ بِأَفْوَاهِهِمْ
وَتَأْبَىٰ قُلُوبُهُمْ وَأَكْثَرُهُمْ فَسِقُونَ

(उनका एहद) क्योंकि (रह सकता है) जब (उनकी ये हालत है) कि अगर तुम पर ग़लबा पा जाए तो तुम्हारे में न तो रिश्ते नाते ही का लिहाज़ करेंगे और न अपने क़ौल व क़रार का ये लोग तुम्हें अपनी ज़बानी (जमा खर्च में) खुश कर देते हैं हालाँकि उनके दिल नहीं मानते और उनमें के बहुतेरे तो बदचलन हैं

9

أَشْتَرُوا ۚ بِآيَةِ اللَّهِ ثَمَنًا ۚ قَلِيلًا ۚ فَصَدُّوا ۚ عَنْ سَبِيلِهِ ۚ ۚ إِنَّهُمْ سَاءَ مَا كَانُوا
يَعْمَلُونَ

और उन लोगों ने खुदा की आयतों के बदले थोड़ी सी कीमत (दुनियावी फायदे) हासिल करके (लोगों को) उसकी राह से रोक दिया बेशक ये लोग जो कुछ करते हैं ये बहुत ही बुरा है

10

لَا يَرْقُبُونَ فِي مُؤْمِنٍ إِلَّا ۚ وَلَا ذِمَّةً ۚ ۚ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُعْتَدُونَ

ये लोग किसी मोमिन के बारे में न तो रिश्ता नाता ही कर लिहाज़ करते हैं और न क़ौल का क़रार का और (वाकई) यही लोग ज्यादाती करते हैं

11

فَإِنْ تَابُوا ۚ وَأَقَامُوا ۚ الصَّلَاةَ ۚ وَءَاتَوْا ۚ الزَّكَاةَ ۚ فَإِخْوَانُكُمْ فِي الدِّينِ ۚ وَنُفَصِّلُ
الْءَايَاتِ لِقَوْمٍ ۚ يَعْلَمُونَ

तो अगर (अभी मुशरिक से) तौबा करें और नमाज़ पढ़ने लगे और ज़कात दें तो तुम्हारे दीनी भाई हैं और हम अपनी आयतों को वाक़िफ़कार लोगों के वास्ते तफ़सीलन बयान करते हैं

12

وَإِنْ نَكَثُوا ۚ أَيْمَانَهُمْ مِّنْ ۚ بَعْدِ عَهْدِهِمْ ۚ وَطَعَنُوا ۚ فِي دِينِكُمْ ۚ فَقَتِلُوا ۚ ۚ أُمَّةَ الْكُفْرِ ۚ
إِنَّهُمْ لَا أَيْمَانَ لَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَنْتَهُونَ

और अगर ये लोग एहद कर चुकने के बाद अपनी क़समें तोड़ डालें और तुम्हारे दीन में तुमको ताना दें तो तुम कुफ़्र के सरवर आवारा लोगों से ख़ूब लड़ाई करो उनकी क़समें का हरगिज़ कोई एतबार नहीं ताकि ये लोग (अपनी शरारत से) बाज़ आएँ

أَلَا تَقْتُلُونَ قَوْمًا نَّكَثُوا أَيْمَانَهُمْ وَهَمُّوا بِإِخْرَاجِ الرَّسُولِ وَهُمْ بَدَّءُوكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ أَتَخْشَوْنَهُمْ ۚ فَاللَّهُ أَحَقُّ أَنْ تَخْشَوْهُ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ

(मुसलमानों) भला तुम उन लोगों से क्यों नहीं लड़ते जिन्होंने अपनी कसमों को तोड़ डाला और रसूल को निकाल बाहर करना (अपने दिल में) ठान लिया था और तुमसे पहले छेड़ भी उन्होंने ही शुरू की थी क्या तुम उनसे डरते हो तो अगर तुम सच्चे ईमानदार हो तो खुदा उनसे कहीं बढ़ कर तुम्हारे डरने के काबिल है

قَاتِلُوهُمْ يُعَذِّبُهُمُ اللَّهُ بِأَيْدِيكُمْ وَيُخْزِهِمْ وَيَنْصَرُّكُمْ عَلَيْهِمْ وَيَشْفِ صُدُورَ قَوْمٍ مُّؤْمِنِينَ

इनसे (बेखौफ़ (खतर) लड़ो खुदा तुम्हारे हाथों उनकी सज़ा करेगा और उन्हें रूसवा करेगा और तुम्हें उन पर फतेह अता करेगा और ईमानदार लोगों के कलेजे ठन्डे करेगा

وَيُذْهِبْ غَيْظَ قُلُوبِهِمْ ۚ وَيَتُوبُ اللَّهُ عَلَىٰ مَنْ يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ

और उन मोमिनीन के दिल की कुदरतें जो (कुफ़ार से पहुँचती है) दफ़ा कर देगा और खुदा जिसकी चाहे तौबा कुबूल करे और खुदा बड़ा वाकिफ़कार (और) हिकमत वाला है

أَمْ حَسِبْتُمْ أَنْ تُتْرَكُوا وَلَمَّا يَعْلَمِ اللَّهُ الَّذِينَ جَاهَدُوا مِنْكُمْ وَلَمْ يَتَّخِذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَا رَسُولِهِ وَلَا الْمُؤْمِنِينَ وَلِجَنَّةٍ ۚ وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ

क्या तुमने ये समझ लिया है कि तुम (यूँ ही) छोड़ दिए जाओगे और अभी तक तो खुदा ने उन लोगों को मुमताज़ किया ही नहीं जो तुम में के (राहे खुदा में) जिहाद करते हैं और खुदा और उसके रसूल और मोमेनीन के सिवा किसी को अपना राज़दार दोस्त नहीं बनाते और जो कुछ भी तुम करते हो खुदा उससे बाख़बर है

مَا كَانَ لِلْمُشْرِكِينَ أَنْ يَعْمُرُوا مَسْجِدَ اللَّهِ شَاهِدِينَ عَلَىٰ أَنْفُسِهِم بِالْكَفْرِ ۚ أُولَٰئِكَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ وَفِي النَّارِ هُمْ خَالِدُونَ

मुशरेकीन का ये काम नहीं कि जब वह अपने कुफ़र का खुद इक़्रार करते हैं तो खुदा की मस्जिदों को (जाकर) आबाद करे यही वह लोग हैं जिनका किया कराया सब अकारत हुआ और ये लोग हमेशा जहन्नुम में रहेंगे

إِنَّمَا يَعْمُرُ مَسْجِدَ اللَّهِ مَنْ ءَامَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَأَقَامَ الصَّلَاةَ وَءَاتَى الزَّكَاةَ وَلَمْ يَخْشَ إِلَّا اللَّهَ ۚ فَعَسَىٰ أُو۟لَٰئِكَ أَنْ يَكُونُوا ۚ مِنَ الْمُهْتَدِينَ

खुदा की मस्जिदों को बस सिर्फ वहीं शख्स (जाकर) आबाद कर सकता है जो खुदा और रोजे आखिरत पर ईमान लाए और नमाज़ पढ़ा करे और ज़कात देता रहे और खुदा के सिवा (और) किसी से न डरो तो अनक़रीब यही लोग हिदायत याफ़ता लोगों में से हो जाएंगे

ۚ أَجَعَلْتُمْ سِقَايَةَ الْحَاجِّ وَعِمَارَةَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ كَمَنْ ءَامَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَجَاهَدَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۚ لَا يَسْتَوِ ۚ نَ عِنْدَ اللَّهِ ۚ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ

क्या तुम लोगों ने हाजियों की सक्काई (पानी पिलाने वाले) और मस्जिदुल हुराम (खानाए काबा की आबादियों को उस शख्स के हमसर (बराबर) बना दिया है जो खुदा और रोजे आखिरत के दिन पर ईमान लाया और खुदा के राह में जेहाद किया खुदा के नज़दीक तो ये लोग बराबर नहीं और खुदा ज़ालिम लोगों की हिदायत नहीं करता है

الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ وَهَاجَرُوا ۚ وَجَاهَدُوا ۚ فِي سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ أَكْظَمُ دَرَجَةً عِنْدَ اللَّهِ ۚ وَأُو۟لَٰئِكَ هُمُ الْفَائِزُونَ

जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया और (खुदा के लिए) हिज़रत एख़्तियार की और अपने मालों से और अपनी जानों से खुदा की राह में जिहाद किया वह लोग खुदा के नज़दीक दर्जे में कही बढ़ कर हैं और यही लोग (आला दर्जे पर) फायज़ होने वाले हैं

يُبَشِّرُهُمْ رَبُّهُمْ بِرَحْمَةٍ ۚ مِنْهُ وَرِضْوَانٍ ۚ وَجَنَّاتٍ ۚ لَّهُمْ فِيهَا نَعِيمٌ ۚ مُّقِيمٌ

उनका परवरदिगार उनको अपनी मेहरबानी और खुशनुदी और ऐसे (हरे भरे) बागों की खुशखबरी देता है जिसमें उनके लिए दाइमी ऐश व (आराम) होगा

خُلْدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۚ إِنَّ اللَّهَ عِنْدَهُ ۚ أَجْرٌ عَظِيمٌ ۚ

और ये लोग उन बागों में हमेशा अब्दआलाबाद (हमेशा हमेशा) तक रहेंगे बेशक खुदा के पास तो बड़ा बड़ा अज़्र व (सवाब) है

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ لَا تَتَّخِذُوا ۚ ءَابَاءَكُمْ وَإِخْوَانَكُمْ أَوْلِيَاءَ إِنِ اسْتَحَبُّوا ۚ الْكُفْرَ عَلَى الْإِيمَانِ ۚ وَمَنْ يَتَوَلَّهُمْ فَاُو۟لَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ

ऐ ईमानदारों अगर तुम्हारे माँ बाप और तुम्हारे (बहन) भाई ईमान के मुकाबले कुफ़र को तरजीह देते हो तो तुम उनको (अपना) ख़ैर ख़्वाह (हमदर्द) न समझो और तुममें जो शख्स उनसे उलफ़त रखेगा तो यही लोग ज़ालिम है

قُلْ إِن كَانَ ءَابَاؤُكُمْ وَأَبْنَاؤُكُمْ وَإِخْوَانُكُمْ وَأَزْوَاجُكُمْ وَعَشِيرَتُكُمْ وَأَمْوَالٌ اقْتَرَفْتُمُوهَا وَتِجَارَةٌ تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا وَمَسْكَنٌ تَرْضَوْنَهَا أَحَبَّ إِلَيْكُمْ مِّنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ ۚ وَجِهَادٍ فِي سَبِيلِهِ ۚ فَتَرَبَّصُوا ۚ حَتَّىٰ يَأْتِيَ اللَّهُ بِأَمْرِهِ ۚ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ

(ऐ रसूल) तुम कह दो तुम्हारे बाप दादा और तुम्हारे बेटे और तुम्हारे भाई बन्द और तुम्हारी बीबियाँ और तुम्हारे कुनबे वाले और वह माल जो तुमने कमा के रख छोड़ा हैं और वह त्जारात जिसके मन्द पड़ जाने का तुम्हें अन्देशा है और वह मकानात जिन्हें तुम पसन्द करते हो अगर तुम्हें खुदा से और उसके रसूल से और उसकी राह में जिहाद करने से ज्यादा अज़ीज़ है तो तुम ज़रा ठहरो यहाँ तक कि खुदा अपना हुक्म (अज़ाब) मौजूद करे और खुदा नाफरमान लोगों की हिदायत नहीं करता

لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللَّهُ فِي مَوَاطِنَ كَثِيرَةٍ ۚ وَيَوْمَ حُنَيْنٍ ۚ إِذْ أَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ فَلَمْ تُغْنِ عَنْكُمْ شَيْئًا ۚ وَضَاقَتْ عَلَيْكُمْ الْأَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ ثُمَّ وَلَّيْتُمْ مُدْبِرِينَ

(मुसलमानों) खुदा ने तुम्हारी बहुतेरे मक्कामात पर (गैबी) इमदाद की और (खासकर) जंग हुनैन के दिन जब तुम्हें अपनी क़सरत (तादाद) ने मगरूर कर दिया था फिर वह क़सरत तुम्हें कुछ भी काम न आयी और (तुम ऐसे घबराए कि) ज़मीन बावजूद उस वसअत (फैलाव) के तुम पर तंग हो गई तुम पीठ कर भाग निकले

ثُمَّ أَنزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ ۚ عَلَى رَسُولِهِ ۚ وَعَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَأَنزَلَ جُنُودًا لَّمْ تَرَوْهَا وَعَذَّبَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ وَذَلِكَ جَزَاءُ الْكَافِرِينَ

तब खुदा ने अपने रसूल पर और मोमिनीन पर अपनी (तरफ से) तसकीन नाज़िल फरमाई और (रसूल की खातिर से) फ़रिशतों के लश्कर भेजे जिन्हें तुम देखते भी नहीं थे और कुफ़्फ़ार पर अज़ाब नाज़िल फरमाया और काफ़िरों की यही सज़ा है

ثُمَّ يَتُوبُ ٱللَّهُ مِنۡ ۚ بَعْدَ ذَٰلِكَ عَلَىٰ مَن يَشَآءُ ۚ ٱللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۚ

उसके बाद खुदा जिसकी चाहे तौबा कुबूल करे और खुदा बड़ा बख्शने वाला मेहरबान है

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ إِنَّمَا ٱلْمُشْرِكُونَ نَجَسٌ ۚ فَلَا يَفْرُبُوا ۚ ٱلْمَسْجِدَ ٱلْحَرَامَ بَعْدَ عَامِهِمْ هَٰذَا ۚ وَإِن خِفْتُمْ عَيْلَةً ۚ فَسَوْفَ يُغْنِيكُمُ ٱللَّهُ مِن فَضْلِهِ ۚ إِن شَآءَ ۚ إِن ٱللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۚ

ऐ ईमानदारों मुशरेकीन तो निरे नजिस हैं तो अब वह उस साल के बाद मस्जिदुल हराम (खाना ए काबा) के पास फिर न फटकने पाएँ और अगर तुम (उनसे जुदा होने में) फक्रों फाक्रा से डरते हो तो अनकरीब ही खुदा तुमको अगर चाहेगा तो अपने फज़ल (करम) से ग़नीकर देगा बेशक खुदा बड़ा वाक्किफ़कार हिकमत वाला है

قَتِلُوا ۚ ٱلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِٱللَّهِ وَلَا بِٱلْيَوْمِ ٱلْءَاخِرِ وَلَا يُحَرِّمُونَ مَا حَرَّمَ ٱللَّهُ وَرَسُولُهُ ۚ وَلَا يَدِينُونَ دِينَ ٱلْحَقِّ مِن ٱلَّذِينَ أُوتُوا ۚ ٱلْكِتَٰبَ حَتَّىٰ يُعْطُوا ۚ ٱلْجَزِيَّةَ عَنْ يَدٍ ۚ وَهُمْ صَٰغِرُونَ

अहले किताब में से जो लोग न तो (दिल से) खुदा ही पर ईमान रखते हैं और न रोज़े आखिरत पर और न खुदा और उसके रसूल की हराम की हुई चीज़ों को हराम समझते हैं और न सच्चे दीन ही को एख्तियार करते हैं उन लोगों से लड़े जाओ यहाँ तक कि वह लोग ज़लील होकर (अपने) हाथ से जज़िया दे

وَقَالَتِ ٱلْيَهُودُ عُزَيْرٌ ٱبْنُ ٱللَّهِ وَقَالَتِ ٱلنَّصْرَىٰ ٱلْمَسِيحُ ٱبْنُ ٱللَّهِ ۚ ذَٰلِكَ قَوْلُهُمْ بِأَفْوَاهِهِمْ ۚ يُضَاهُونَ قَوْلَ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا ۚ مِن قَبْلُ ۚ قَتَلَهُمُ ٱللَّهُ ۚ أَنَّىٰ يُؤْفَكُونَ

यहूद तो कहते हैं कि अज़ीज़ खुदा के बेटे हैं और ईसाई कहते हैं कि मसीहा (ईसा) खुदा के बेटे हैं ये तो उनकी बात है और (वह खुद) उन्हीं के मुँह से ये लोग भी उन्हीं काफ़िरों की सी बातें बनाने लगे जो उनसे पहले गुज़र चुके हैं खुदा उनको क़त्ल (तहस नहस) करके (देखो तो) कहाँ से कहाँ भटके जा रहे हैं

اتَّخَذُوا؟ أَحْبَارَهُمْ وَرُهْبَنَهُمْ أَرْبَابًا؟ مِّنْ دُونِ اللَّهِ وَالْمَسِيحَ ابْنَ مَرْيَمَ وَمَا أُمِرُوا؟
إِلَّا لِيَعْبُدُوا؟ إِلَهًا؟ وَحْدًا؟ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ؟ سُبْحَنَهُ؟ عَمَّا يُشْرِكُونَ

उन लोगों ने तो अपने खुदा को छोड़कर अपनी आलिमों को और अपने जाहिदों को और मरियम के बेटे मसीह को अपना परवरदिगार बना डाला हालाँकि उन्होंने सिवाए इसके और हुक्म ही नहीं दिया गया कि खुदाएँ यकता (सिर्फ खुदा) की इबादत करें उसके सिवा (और कोई क़ाबिले परसतिश नहीं)

يُرِيدُونَ أَن يُطْفِئُوا؟ نُورَ اللَّهِ بِأَفْوَاهِهِمْ وَيَأْبَى اللَّهُ إِلَّا أَن يُتِمَّ نُورَهُ؟ وَلَوْ كَرِهَ
الْكَافِرُونَ

जिस चीज़ को ये लोग उसका शरीक बनाते हैं वह उससे पाक व पाक़ीज़ा है ये लोग चाहते हैं कि अपने मुँह से (फूँक मारकर) खुदा के नूर को बुझा दें और खुदा इसके सिवा कुछ मानता ही नहीं कि अपने नूर को पूरा ही करके रहे

هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ؟ بِالْهُدَىٰ وَدِينِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ؟ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ؟ وَلَوْ كَرِهَ
الْمُشْرِكُونَ

अगरचे कुफ़्फ़ार बुरा माना करें वही तो (वह खुदा) है कि जिसने अपने रसूल (मोहम्मद) को हिदायत और सच्चे दीन के साथ (मबऊस करके) भेजता कि उसको तमाम दीनो पर ग़ालिब करे अगरचे मुशरेकीन बुरा माना करे

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا؟ إِنَّ كَثِيرًا؟ مِّنَ الْأَحْبَارِ وَالرُّهْبَانِ لَيَأْكُلُونَ أَمْوَالَ النَّاسِ
بِالْبُطْلِ وَيَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ؟ وَالَّذِينَ يَكْنِزُونَ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا يَنْفِقُونَهَا
فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ؟

ऐ ईमानदारों इसमें उसमें शक़ नहीं कि (यहूद व नसारा के) बहुतेरे आलिम जाहिद लोगों के माल (नाहक़) चख जाते हैं और (लोगों को) खुदा की राह से रोकते हैं और जो लोग सोना और चाँदी जमा करते जाते हैं और उसको खुदा की राह में खर्च नहीं करते तो (ऐ रसूल) उन को दर्दनाक अज़ाब की खुशखबरी सुना दो

يَوْمَ يُحْمَىٰ عَلَيْهَا فِي نَارِ جَهَنَّمَ فَتُكْوَىٰ بِهَا جِبَاهُهُمْ وَجُنُوبُهُمْ وَظُهُورُهُمْ ۖ هَٰذَا مَا كُنْتُمْ لَأَنفُسِكُمْ فَذُوقُوا ۖ مَا كُنْتُمْ تَكْنُزُونَ

(जिस दिन वह (सोना चाँदी) जहन्नुम की आग में गर्म (और लाल) किया जाएगा फिर उससे उनकी पेशानियाँ और उनके पहलू और उनकी पीठें दागी जाएँगी (और उनसे कहा जाएगा) ये वह है जिसे तुमने अपने लिए (दुनिया में) जमा करके रखा था तो (अब) अपने जमा किए का मज़ा चखो

إِنَّ عِدَّةَ الشُّهُورِ عِنْدَ اللَّهِ اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا ۖ فِي كِتَابِ اللَّهِ يَوْمَ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ مِنْهَا أَرْبَعَةٌ حُرُمٌ ۖ ۚ ذَٰلِكَ الدِّينُ الْقَيِّمُ ۚ فَلَا تَظْلِمُوا ۚ فِيهِنَّ أَنفُسُكُمْ ۚ وَاقْتُلُوا ۚ الْمُشْرِكِينَ كَافَّةً ۚ كَمَا يُقْتُلُونَكُم كَافَّةً ۚ ۚ وَأَعْلَمُوا ۚ أَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُتَّقِينَ

इसमें तो शक ही नहीं कि खुदा ने जिस दिन आसमान व ज़मीन को पैदा किया (उसी दिन से) खुदा के नज़दीक खुदा की किताब (लौहे महफूज़) में महीनों की गिनती बारह महीने है उनमें से चार महीने (अदब व) हुरमत के हैं यही दीन सीधी राह है तो उन चार महीनों में तुम अपने ऊपर (कुशत व खून (मार काट) करके) जुल्म न करो और मुशरेकीन जिस तरह तुम से सबके बस मिलकर लड़ते हैं तुम भी उसी तरह सबके सब मिलकर उन से लड़ो और ये जान लो कि खुदा तो यकीनन परहेज़गारों के साथ है

إِنَّمَا النَّسِيءُ زِيَادَةٌ ۖ فِي الْكُفْرِ ۖ يُضِلُّ بِهِ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ يُحِلُّونَهُ ۖ ۚ عَامًا ۖ ۚ وَيُحَرِّمُونَهُ ۖ ۚ عَامًا ۖ ۚ لِّيُؤَاطُوا ۖ ۚ عِدَّةَ مَا حَرَّمَ اللَّهُ فَيَحِلُّوا ۖ ۚ مَا حَرَّمَ اللَّهُ ۖ ۚ زِينًا لَهُمْ ۖ ۚ سَوْءَ أَعْمَلِهِمْ ۖ ۚ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ

महीनों का आगे पीछे कर देना भी कुफ़्र ही की ज्यादाती है कि उनकी बदौलत कुफ़्रार (और) बहक जाते हैं एक बरस तो उसी एक महीने को हलाल समझ लेते हैं और (दूसरे) साल उसी महीने को हुराम कहते हैं ताकि खुदा ने जो (चार महीने) हुराम किए हैं उनकी गिनती ही पूरी कर लें और खुदा की हुराम की हुई चीज़ को हलाल कर लें उनकी बुरी (बुरी) कारस्तानियाँ उन्हें भली कर दिखाई गई हैं और खुदा काफिर लोगो को मंज़िले मक़सूद तक नहीं पहुँचाया करता

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ مَا لَكُمْ إِذَا قِيلَ لَكُمْ أَنفِرُوا ۚ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَتَأْتَلْتُمْ إِلَى
الْأَرْضِ ۚ أَرْضَيْتُمْ بِالْحَيَاةِ الدُّنْيَا مِنَ الْآخِرَةِ ۚ فَمَا مَتَّعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا فِي
الْآخِرَةِ إِلَّا قَلِيلٌ

ऐ ईमानदारों तुम्हें क्या हो गया है कि जब तुमसे कहा जाता है कि खुदा की राह में (जिहाद के लिए) निकलो तो तुम लदधड़
(ढीले) हो कर ज़मीन की तरफ झुके पड़ते हो क्या तुम आखिरत के बनिस्बत दुनिया की (चन्द रोज़ा) ज़िन्दगी को पसन्द करते
थे तो (समझ लो कि) दुनिया की ज़िन्दगी का साज़ो सामान (आखिर के) ऐश व आराम के मुकाबले में बहुत ही थोड़ा है

إِلَّا تَنْفِرُوا ۚ يُعَذِّبُكُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۚ وَيَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ وَلَا تَضُرُّوهُ شَيْئًا ۚ
وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

अगर (अब भी) तुम न निकलोगे तो खुदा तुम पर दर्दनाक अज़ाब नाज़िल फरमाएगा और (खुदा कुछ मजबूर तो है नहीं)
तुम्हारे बदले किसी दूसरी क़ौम को ले आएगा और तुम उसका कुछ भी बिगाड़ नहीं सकते और खुदा हर चीज़ पर क़ादिर है

إِلَّا تَنْصُرُوهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللَّهُ إِذْ أَخْرَجَهُ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ ثَانِيَ اثْنَيْنِ إِذْ هُمَا فِي الْغَارِ
إِذْ يَقُولُ لِصَاحِبِهِ ۚ لَا تَحْزَنْ إِنَّ اللَّهَ مَعَنَا ۚ فَأَنزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَيْهِ وَأَيَّدَهُ ۚ
بِجُنُودٍ ۚ لَّمْ تَرَوْهَا وَجَعَلَ كَلِمَةَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ السُّفْلَىٰ ۚ وَكَلِمَةَ اللَّهِ هِيَ الْعُلْيَا ۚ
وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ

अगर तुम उस रसूल की मदद न करोगे तो (कुछ परवाह नहीं खुदा मददगार है) उसने तो अपने रसूल की उस वक्त मदद की
जब उसकी कुफ़ार (मक्का) ने (घर से) निकल बाहर किया उस वक्त सिर्फ (दो आदमी थे) दूसरे रसूल थे जब वह दोनो ग़ार
(सौर) में थे जब अपने साथी को (उसकी गिरिया व ज़ारी (रोने) पर) समझा रहे थे कि घबराओ नहीं खुदा यकीनन हमारे साथ है
तो खुदा ने उन पर अपनी (तरफ से) तसकीन नाज़िल फरमाई और (फ़रिश्तों के) ऐसे लश्कर से उनकी मदद की जिनको तुम
लोगों ने देखा तक नहीं और खुदा ने काफ़िरों की बात नीची कर दिखाई और खुदा ही का बोल बाला है और खुदा तो ग़ालिब
हिकमत वाला है

أَنْفِرُوا ۚ خِفَافًا ۚ وَثِقَالًا ۚ وَجَاهِدُوا ۚ بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنْفُسِكُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۚ ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ

(मुसलमानों) तुम हलके फुलके (हँसते) हो या भारी भरकम (मसलह) बहर हाल जब तुमको हुक्म दिया जाए फौरन चल खड़े हो और अपनी जानों से अपने मालों से खुदा की राह में जिहाद करो अगर तुम (कुछ जानते हो तो) समझ लो कि यही तुम्हारे हक में बेहतर है

لَوْ كَانَ عَرَضًا ۚ قَرِيبًا ۚ وَسَفَرًا ۚ قَاصِدًا ۚ لَآتَبَعُوكَ وَلَكِنْ ۚ بَعُدَتْ عَلَيْهِمُ الشُّقَّةُ ۚ وَسَيَحْلِفُونَ بِاللَّهِ لَوِ اسْتَطَعْنَا لَخَرَجْنَا مَعَكُمْ يُهْلِكُونَ أَنْفُسَهُمْ وَاللَّهُ يَعْلَمُ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ

(ऐ रसूल) अगर सरे दस्त फ़ायदा और सफर आसान होता तो यकीनन ये लोग तुम्हारा साथ देते मगर इन पर मुसफ़र (सफ़र) की मशक़क़त (सख्ती) तूलानी हो गई और अगर पीछे रह जाने की वज़ह से पूछोगे तो ये लोग फौरन खुदा की कसमें खाएंगे कि अगर हम में सकत होती तो हम भी ज़रूर तुम लोगों के साथ ही चल खड़े होते ये लोग झूठी कसमें खाकर अपनी जान आप हलाक किए डालते हैं और खुदा तो जानता है कि ये लोग बेशक झूठे हैं

عَفَا اللَّهُ عَنْكَ لِمَ أَذِنْتَ لَهُمْ حَتَّى يَتَبَيَّنَ لَكَ الَّذِينَ صَدَقُوا ۚ وَتَعْلَمَ الْكَاذِبِينَ

(ऐ रसूल) खुदा तुमसे दरगुज़र फरमाए तुमने उन्हें (पीछे रह जाने की) इजाज़त ही क्यों दी ताकि (तुम) अगर ऐसा न करते तो तुम पर सच बोलने वाले (अलग) ज़ाहिर हो जाते और तुम झूठों को (अलग) मालूम कर लेते

لَا يَسْتُذْنِكُ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ أَنْ يُجَاهِدُوا ۚ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ ۚ بِالْمُتَّقِينَ

(ऐ रसूल) जो लोग (दिल से) खुदा और रोज़े आखिरत पर ईमान रखते हैं वह तो अपने माल से और अपनी जानों से जिहाद (न) करने की इजाज़त माँगने के नहीं (बल्कि वह खुद जाएंगे) और खुदा परहेज़गारों से खूब वाकिफ़ है

إِنَّمَا يَسْتَأْذِنُكَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَارْتَابَتْ قُلُوبُهُمْ فَهُمْ فِي رَيْبِهِمْ
يَتَرَدَّدُونَ

(पीछे रह जाने की) इजाज़त तो बस वही लोग माँगेंगे जो खुदा और रोजे आखिरत पर ईमान नहीं रखते और उनके दिल (तरह तरह) के शक कर रहे हैं तो वह अपने शक में डावाँडोल हो रहे हैं

﴿ وَلَوْ أَرَادُوا ﴾ الْخُرُوجَ لَأَعَدُّوا ﴿ لَهُ ﴾ عُدَّةً ﴿ وَلَكِنْ كَرِهَ اللَّهُ ﴾ أَنْ ﴿ بِعَاثَهُمْ فَثَبَّطَهُمْ ﴾
وَقِيلَ أَقْعُدُوا ﴿ مَعَ الْقُعْدِينَ ﴾

(कि क्या करें क्या न करें) और अगर ये लोग (घर से) निकलने की ठान लेते तो (कुछ न कुछ सामान तो करते मगर (बात ये है) कि खुदा ने उनके साथ भेजने को नापसन्द किया तो उनको काहिल बना दिया और (गोया) उनसे कह दिया गया कि तुम बैठने वालों के साथ बैठे (मक्खी मारते) रहो

لَوْ خَرَجُوا ﴿ فَبِكُمْ ﴾ مَا زَادُوكُمْ إِلَّا خَبَالًا ﴿ وَلَا أَوْضَعُوا ﴿ خِلَالَكُمْ يَبْغُونَكُمُ الْفِتْنَةَ ﴾
وَفَبِكُمْ سَمَّعُونَ لَهُمْ ﴿ وَاللَّهُ عَلِيمٌ ﴿ بِالظَّالِمِينَ

अगर ये लोग तुममें (मिलकर) निकलते भी तो बस तुममें फ़साद ही बरपा कर देते और तुम्हारे हक़ में फ़ितना कराने की गरज़ से तुम्हारे दरमियान (इधर उधर) घोड़े दौड़ाते फिरते और तुममें से उनके जासूस भी हैं (जो तुम्हारी उनसे बातें बयान करते हैं) और खुदा शरीरों से खूब वाकिफ़ है

لَقَدْ ابْتَغُوا ﴿ الْفِتْنَةَ مِنْ قَبْلُ وَقَلَّبُوا ﴿ لَكَ الْأُمُورَ حَتَّى جَاءَ الْحَقُّ وَظَهَرَ أَمْرُ اللَّهِ
وَهُمْ كُرْهُونَ

(ए रसूल) इसमें तो शक़ नहीं कि उन लोगों ने पहले ही फ़साद डालना चाहा था और तुम्हारी बहुत सी बातें उलट पुलट के यहाँ तक कि हक़ आ पहुँचा और खुदा ही का हुक्म ग़ालिब रहा और उनको नागवार ही रहा

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَقُولُ أُنْذِن لِّي وَلَا تَفْتِنِّي ۚ أَلَا فِي الْفِتْنَةِ سَقَطُوا ۗ ۚ وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيطَةٌ ۚ بِالْكَافِرِينَ

उन लोगों में से बाज़ ऐसे भी हैं जो साफ कहते हैं कि मुझे तो (पीछे रह जाने की) इजाज़त दीजिए और मुझ बला में न फँसाइए (ऐ रसूल) आगाह हो कि ये लोग खुद बला में (औंधे मुँह) गिर पड़े और जहन्नुम तो काफिरों का यक़ीनन घेरे हुए ही हैं

إِنْ تُصِيبَكَ حَسَنَةٌ ۖ تَسُوهُمْ ۚ وَإِنْ تُصِيبَكَ مُصِيبَةٌ ۖ يَقُولُوا ۚ قَدْ أَخَذْنَا أَمْرَنَا مِنْ قَبْلُ وَيَتَوَلَّوْا ۚ وَهُمْ فَرِحُونَ

तुमको कोई फायदा पहुंचा तो उन को बुरा मालूम होता है और अगर तुम पर कोई मुसीबत आ पड़ती तो ये लोग कहते हैं कि (इस वजह से) हमने अपना काम पहले ही ठीक कर लिया था और (ये कह कर) खुश (तुम्हारे पास से उठकर) वापस लौटते हैं

قُلْ لَنْ يُصِيبَنَا إِلَّا مَا كَتَبَ اللَّهُ لَنَا هُوَ مَوْلَانَا ۚ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि हम पर हरगिज़ कोई मुसीबत पड़ नहीं सकती मगर जो खुदा ने तुम्हारे लिए (हमारी तक़दीर में) लिख दिया है वही हमारा मालिक है और ईमानदारों को चाहिए भी कि खुदा ही पर भरोसा रखें

قُلْ هَلْ تَرَبَّصُونَ بِنَا إِلَّا إِحْدَى الْحُسْنَيْنِ ۚ وَنَحْنُ نَتَرَبَّصُ بِكُمْ أَنْ يُصِيبَكُمْ اللَّهُ بِعَذَابٍ ۚ مِّنْ عِنْدِهِ ۚ أَوْ بِأَيْدِينَا ۚ فَتَرَبَّصُوا ۚ إِنَّا مَعَكُمْ مُّتَرَبِّصُونَ

(ऐ रसूल) तुम मुनाफ़िकों से कह दो कि तुम तो हमारे वास्ते (फतेह या शहादत) दो भलाइयों में से एक के ख्वाह मख्वाह मुन्तज़िर ही हो और हम तुम्हारे वास्ते उसके मुन्तज़िर हैं कि खुदा तुम पर (खास) अपने ही से कोई अज़ाब नाज़िल करे या हमारे हाथों से फिर (अच्छा) तुम भी इन्तेज़ार करो हम भी तुम्हारे साथ (साथ) इन्तेज़ार करते हैं

قُلْ أَنْفِقُوا ۚ طَوْعًا أَوْ كَرْهًا ۚ لَّنْ يُتَقَبَلَ مِنْكُمْ ۚ إِنَّكُمْ كُنْتُمْ قَوْمًا ۚ فَسِقِينَ

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि तुम लोग ख्वाह खुशी से खर्च करो या मजबूरी से तुम्हारी ख़ैरात तो कभी कुबूल की नहीं जाएगी तुम यक़ीनन बदकार लोग हो

وَمَا مَنَعَهُمْ أَنْ تُقْبَلَ مِنْهُمْ نَفَقَتُهُمْ إِلَّا أَنَّهُمْ كَفَرُوا ۖ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ۚ وَلَا يَأْتُونَ الصَّلَاةَ إِلَّا وَهُمْ كُسَالَىٰ وَلَا يُنْفِقُونَ إِلَّا وَهُمْ كَرِهُونَ

और उनकी खैरात के कुबूल किए जाने में और कोई वजह मायने नहीं मगर यही कि उन लोगों ने खुदा और उसके रसूल की नाफरमानी की और नमाज़ को आते भी हैं तो अलकसाए हुए और खुदा की राह में खर्च करते भी हैं तो बे दिली से

فَلَا تُعْجِبْكَ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ ۖ إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيُعَذِّبَهُمْ بِهَا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ أَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كَافِرُونَ

(ऐ रसूल) तुम को न तो उनके माल हैरत में डाले और न उनकी औलाद (क्योंकि) खुदा तो ये चाहता है कि उनको आल व माल की वजह से दुनिया की (चन्द रोज़) ज़िन्दगी (ही) में मुबितलाए अज़ाब करे और जब उनकी जानें निकलें तब भी वह काफिर (के काफिर ही) रहें

وَيَحْلِفُونَ بِاللَّهِ إِنَّهُمْ لَمِنْكُمْ وَمَا هُمْ مِنْكُمْ وَلَكِنَّهُمْ قَوْمٌ يَفْرَقُونَ

और (मुसलमानों) ये लोग खुदा की कसम खाएंगे फिर वह तुममें ही के हैं हालाँकि वह लोग तुममें के नहीं हैं मगर हैं ये लोग बुज़दिल हैं

لَوْ يَجِدُونَ مَلْجَأً أَوْ مَغْرَتٍ أَوْ مَدْخَلًا ۖ لَوَلَّوْا ۚ إِلَيْهِ وَهُمْ يَجْمَحُونَ

कि गर कहीं ये लोग पनाह की जगह (क़िले) या (छिपने के लिए) ग़ार या घुस बैठने की कोई (और) जगह पा जाए तो उसी तरफ रस्सियाँ तोड़ाते हुए भाग जाएँ

وَمِنْهُمْ مَنْ يَلْمِزُكَ فِي الصَّدَقَاتِ فَإِنْ أُعْطُوا مِنْهَا رَضُوا ۚ وَإِنْ لَمْ يُعْطُوا مِنْهَا إِذَا هُمْ يَسْخَطُونَ

(ऐ रसूल) उनमें से कुछ तो ऐसे भी हैं जो तुम्हें खैरात (की तकसीम) में (ख्वाह मा ख्वाह) इल्ज़ाम देते हैं फिर अगर उनमें से कुछ (माकूल मिक्दार(हिस्सा)) दे दिया गया तो खुश हो गए और अगर उनकी मर्ज़ी के मुवाफ़िक़ उसमें से उन्हें कुछ नहीं दिया गया तो बस फौरन ही बिगड़ बैठे

وَلَوْ أَنَّهُمْ رَضُوا ۚ مَا ءَاتَاهُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ ۚ وَقَالُوا ۚ حَسْبُنَا اللَّهُ سَيُؤْتِينَا اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ ۚ وَرَسُولُهُ ۚ إِنَّا إِلَى اللَّهِ رَاغِبُونَ

और जो कुछ खुदा ने और उसके रसूल ने उनको अता फरमाया था अगर ये लोग उस पर राज़ी रहते और कहते कि खुदा हमारे वास्ते काफी है (उस वक्त नहीं तो) अनकरीब ही खुदा हमें अपने फज़ल व करम से उसका रसूल दे ही देगा हम तो यकीनन अल्लाह ही की तरफ लौ लगाए बैठे हैं

ۚ إِنَّمَا الصَّدَقَتُ لِلْفُقَرَاءِ وَالْمَسْكِينِ وَالْعَمِلِينَ عَلَيْهَا وَالْمُؤَلَّفَةِ قُلُوبُهُمْ وَفِي الرِّقَابِ وَالْغُرَمِينَ وَفِي سَبِيلِ اللَّهِ وَأَبْنِ السَّبِيلِ ۚ فَرِيضَةً ۚ مِّنَ اللَّهِ ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۚ

(तो उनका क्या कहना था) ख़ैरात तो बस खास फकीरों का हक़ है और मोहताजों का और उस (ज़कात वग़ैरह) के कारिन्दों का और जिनकी तालीफ़ क़लब की गई है (उनका) और (जिन की) गर्दनो में (गुलामी का फन्दा पड़ा है उनका) और ग़द्दारों का (जो खुदा से अदा नहीं कर सकते) और खुदा की राह (जिहाद) में और परदेसियों की क़फ़ालत में खर्च करना चाहिए ये हुक्क़ खुदा की तरफ से मुकरर किए हुए हैं और खुदा बड़ा वाक़िफ़ कार हिकमत वाला है

وَمِنْهُمْ الَّذِينَ يُؤْذُونَ النَّبِيَّ وَيَقُولُونَ هُوَ أُذُنٌ ۚ قُلْ أُذُنٌ خَيْرٌ ۚ لَّكُمْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَيُؤْمِنُ لِلْمُؤْمِنِينَ وَرَحْمَةً ۚ لِلَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ مِنْكُمْ ۚ وَالَّذِينَ يُؤْذُونَ رَسُولَ اللَّهِ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۚ

और उसमें से बाज़ ऐसे भी हैं जो (हमारे) रसूल को सताते हैं और कहते हैं कि बस ये कान ही (कान) हैं (ऐ रसूल) तुम कह दो कि (कान तो हैं मगर) तुम्हारी भलाई सुन्ने के कान हैं कि खुदा पर ईमान रखते हैं और मोमिनीन की (बातों) का यकीन रखते हैं और तुममें से जो लोग ईमान ला चुके हैं उनके लिए रहमत और जो लोग रसूल खुदा को सताते हैं उनके लिए दर्दनाक अज़ाब हैं

يَخْلِفُونَ بِاللَّهِ لَكُمْ لِيَرْضَوْكُمْ وَاللَّهُ وَرَسُولُهُ ۚ أَحَقُّ أَنْ يُرْضَوْهُ إِنْ كَانُوا ۚ مُؤْمِنِينَ

(मुसलमानों) ये लोग तुम्हारे सामने खुदा की क़समें खाते हैं ताकि तुम्हें राज़ी कर ले हालाँकि अगर ये लोग सच्चे ईमानदार हैं

أَلَمْ يَعْلَمُوا أَنَّهُ؟ مَنْ يُحَادِدِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ؟ فَأَنَّ لَهُ؟ نَارَ جَهَنَّمَ خُلِدًا فِيهَا؟ ذَلِكَ الْخِزْيُ الْعَظِيمُ

तो खुदा और उसका रसूल कहीं ज्यादा हकदार है कि उसको राजी रखें क्या ये लोग ये भी नहीं जानते कि जिस शख्स ने खुदा और उसके रसूल की मुखालेफत की तो इसमें शक ही नहीं कि उसके लिए जहन्नुम की आग (तैयार रखी) है

يَحْذَرُ الْمُنَافِقُونَ أَنْ تُنْزَلَ عَلَيْهِمْ سُورَةٌ؟ تُنَبِّئُهُمْ بِمَا فِي قُلُوبِهِمْ؟ قُلْ أَسْتَهْزِئُوكُمُ؟ إِنَّ اللَّهَ مُخْرِجٌ؟ مَا تَحْذَرُونَ

जिसमें वह हमेशा (जलता भुनता) रहेगा यही तो बड़ी रूसवाई है मुनाफिकीन इस बात से डरते हैं कि (कहीं ऐसा न हो) इन मुलसमानों पर (रसूल की माअरफत) कोई सूरा नाज़िल हो जाए जो उनको जो कुछ उन मुनाफिकीन के दिल में है बता दे (ऐ रसूल) तुम कह दो कि (अच्छा) तुम मसखरापन किए जाओ

وَلَيْن سَأَلْتَهُمْ لَيَقُولُنَّ إِنَّمَا كُنَّا نَخُوضُ وَنَلْعَبُ؟ قُلْ أَبِاللَّهِ وَءَايَاتِهِ؟ وَرَسُولِهِ؟ كُنْتُمْ تَسْتَهْزِئُونَ

जिससे तुम डरते हो खुदा उसे ज़रूर जाहिर कर देगा और अगर तुम उनसे पूछो (कि ये हरकत थी) तो ज़रूर यूं ही कहेंगे कि हम तो यूं ही बातचीत (दिल्ली) बाज़ी ही कर रहे थे तुम कहो कि हाए क्या तुम खुदा से और उसकी आयतों से और उसके रसूल से हँसी कर रहे थे

لَا تَعْتَذِرُوا؟ قَدْ كَفَرْتُمْ بَعْدَ إِيمَانِكُمْ؟ إِنَّ نَعْفُ عَنْ طَائِفَةٍ؟ مِّنْكُمْ نُعَذِّبُ طَائِفَةً؟ بِأَنَّهُمْ كَانُوا؟ مُّجْرِمِينَ

अब बातें न बनाओं हक तो ये हैं कि तुम ईमान लाने के बाद काफ़िर हो बैठे अगर हम तुममें से कुछ लोगों से दरगुज़र भी करें तो हम कुछ लोगों को सज़ा ज़रूर देंगे इस वजह से कि ये लोग कुसूरवार ज़रूर हैं

الْمُنْفِقُونَ وَالْمُنْفِقَاتُ بَعْضُهُمْ مِّنْ بَعْضٍ ۚ يَأْمُرُونَ بِالْمُنْكَرِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمَعْرُوفِ وَيَقْبِضُونَ أَيْدِيَهُمْ ۚ نَسُوا اللَّهَ فَنَسِيَهُمْ ۚ إِنَّ الْمُنْفِقِينَ هُمُ الْفَاسِقُونَ

मुनाफिक़ मर्द और मुनाफिक़ औरतें एक दूसरे के बाहम जिन्स हैं कि (लोगों को) बुरे काम का तो हुक्म करते हैं और नेक कामों से रोकते हैं और अपने हाथ (राहे खुदा में खर्च करने से) बन्द रखते हैं (सच तो यह है कि) ये लोग खुदा को भूल बैठे तो खुदा ने भी (गोया) उन्हें भुला दिया बेशक मुनाफिक़ बदचलन है

وَعَدَ اللَّهُ الْمُنْفِقِينَ وَالْمُنْفِقَاتِ وَالْكُفَّارَ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ هِيَ حَسْبُهُمْ ۚ وَلَعَنَهُمُ اللَّهُ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيمٌ ۚ

मुनाफिक़ मर्द और मुनाफिक़ औरतें और काफिरों से खुदा ने जहन्नुम की आग का वायदा तो कर लिया है कि ये लोग हमेशा उसी में रहेंगे और यही उन के लिए काफ़ी है और खुदा ने उन पर लानत की है और उन्हीं के लिए दाइमी (हमेशा रहने वाला) अज़ाब है

كَالَّذِينَ مِن قَبْلِكُمْ كَانُوا أَشَدَّ مِنْكُمْ قُوَّةً ۚ وَكَثُرَ أَمْوَالُهُمْ ۚ وَأَوْلَدُوا ۚ فَاسْتَمْتَعُوا بِخَلْقِهِمْ ۚ فَاسْتَمْتَعْتُمْ بِخَلْقِكُمْ كَمَا أَصْنَعُ الَّذِينَ مِن قَبْلِكُمْ بِخَلْقِهِمْ وَخُضْتُمْ كَالَّذِي خَاضُوا ۚ أَوَلَيْكَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۚ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْخَسِرُونَ

(मुनाफिक़ो तुम्हारी तो) उनकी मसल है जो तुमसे पहले थे वह लोग तुमसे क़वत में (भी) ज्यादा थे और औलाद में (भी) कहीं बढ़ कर तो वह अपने हिस्से से भी फ़ायदा उठा हो चुके तो जिस तरह तुम से पहले लोग अपने हिस्से से फायदा उठा चुके हैं इसी तरह तुम ने अपने हिस्से से फायदा उठा लिया और जिस तरह वह बातिल में घुसे रहे उसी तरह तुम भी घुसे रहे ये वह लोग हैं जिन का सब किया धरा दुनिया और आखिरत (दोनों) में अकारत हुआ और यही लोग घाटे में हैं

أَلَمْ يَأْتِهِمْ نَبَأُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَوْمِ نُوحٍ ۖ وَعَادٍ ۖ وَثَمُودَ وَقَوْمِ إِبْرَاهِيمَ وَأَصْحَابِ
مَدْيَنَ وَالْمُؤْتَفِكَاتِ ۚ أَتَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ ۚ فَمَا كَانَ اللَّهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلَكِنْ كَانُوا ۚ
أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ

क्या इन मुनाफिकों को उन लोगों की खबर नहीं पहुँची है जो उनसे पहले हो गुजरे हैं नूह की क़ौम और आद और समूद और
इबराहीम की क़ौम और मदीयन वाले और उलटी हुई बस्तियों के रहने वाले कि उनके पास उनके रसूल वाजेए (और रौशन)
मौजिज़े लेकर आए तो (वह मुब्तिलाए अज़ाब हुए) और खुदा ने उन पर जुल्म नहीं किया मगर ये लोग खुद अपने ऊपर जुल्म
करते थे

وَالْمُؤْمِنُونَ وَالْمُؤْمِنَاتُ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ ۚ يَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ
الْمُنْكَرِ وَيُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَيُطِيعُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۚ أُو۟لَٰئِكَ
سَيَرْحَمُهُمُ اللَّهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۚ

और ईमानदार मर्द और ईमानदार औरते उनमें से बाज़ के बाज़ रफीक है और नामज़ पाबन्दी से पढ़ते हैं और ज़कात देते हैं और
खुदा और उसके रसूल की फरमाबरदारी करते हैं यही लोग हैं जिन पर खुदा अनक्ररीब रहम करेगा बेशक खुदा ग़ालिब हिकमत
वाला है

وَعَدَ اللَّهُ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ جَنَّاتٍ ۖ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا
وَمَسْكَنَ طَيِّبَةً ۚ فِي جَنَّاتِ عَدْنٍ ۚ وَرِضْوَانٌ ۚ مِّنَ اللَّهِ أَكْبَرُ ۚ ذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ
الْعَظِيمُ

खुदा ने ईमानदार मर्दों और ईमानदारा औरतों से (बेहश्त के) उन बाग़ों का वायदा कर लिया है जिनके नीचे नहरें जारी हैं और
वह उनमें हमेशा रहेंगे (बेहश्त) अदन के बाग़ों में उम्दा उम्दा मकानात का (भी वायदा फरमाया) और खुदा की खुशनूदी उन
सबसे बालातर है- यही तो बड़ी (आला दर्जे की) कामयाबी है

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنَافِقِينَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ ۚ وَمَأْوَاهُمُ جَهَنَّمُ ۚ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ

ऐ रसूल कुफ़्कार के साथ (तलवार से) और मुनाफ़िकों के साथ (ज़बान से) जिहाद करो और उन पर सख्ती करो और उनका ठिकाना तो जहन्नूम ही है और वह (क्या) बुरी जगह है

يَحْلِفُونَ بِاللَّهِ مَا قَالُوا ۚ وَلَقَدْ قَالُوا ۚ كَلِمَةَ الْكُفْرِ وَكَفَرُوا ۚ بَعْدَ إِسْلَامِهِمْ وَهُمْ مُّوَا ۚ بِمَا لَمْ يَنَالُوا ۚ وَمَا نَقَمُوا ۚ إِلَّا أَنْ أَغْنَاهُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ ۚ مِنْ فَضْلِهِ ۚ فَإِنْ يَتُوبُوا ۚ يَكُ خَيْرًا ۚ لَهُمْ ۚ وَإِنْ يَتَوَلَّوْا ۚ يُعَذِّبُهُمُ اللَّهُ عَذَابًا أَلِيمًا ۚ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۚ وَمَا لَهُمْ فِي الْأَرْضِ مِنْ وَلِيٍّ ۚ وَلَا نَصِيرٍ ۚ

ये मुनाफ़ेक़ीन खुदा की क़समें खाते हैं कि (कोई बुरी बात) नहीं कही हालाँकि उन लोगों ने कुफ़्र का कलमा ज़रूर कहा और अपने इस्लाम के बाद काफ़िर हो गए और जिस बात पर क़ाबू न पा सके उसे ठान बैठे और उन लोगों ने (मुसलमानों से) सिर्फ़ इस वजह से अदावत की कि अपने फ़ज़ल व करम से खुदा और उसके रसूल ने दौलत मन्द बना दिया है तो उनके लिए उसमें ख़ैर है कि ये लोग अब भी तौबा कर लें और अगर ये न मानेंगे तो खुदा उन पर दुनिया और आख़िरत में दर्दनाक अज़ाब नाज़िल फरमाएगा और तमाम दुनिया में उन का न कोई हामी होगा और न मददगार

ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ عٰهَدَ اللّٰهَ لَئِنْ ءَاتٰنَا مِنْ فَضْلِهِ ۚ لَنَصَّدَّقَنَّ وَلَنَكُوْنَنَّ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ

और इन (मुनाफ़ेक़ीन) में से बाज़ ऐसे भी हैं जो खुदा से क़ौल क़रार कर चुके थे कि अगर हमें अपने फ़ज़ल (व करम) से (कुछ माल) देगा तो हम ज़रूर ख़ैरात किया करेंगे और नेकोकार बन्दे हो जाएँगे

فَلَمّآ ءَاتٰهُمْ مِّنْ فَضْلِهِ ۚ بَخِلُوْا ۚ بِهٖ ۚ وَتَوَلَّوْا ۚ وَهُمْ مُّعْرِضُوْنَ

तो जब खुदा ने अपने फ़ज़ल (व करम) से उन्हें अता फरमाया-तो लगे उसमें बुख़ल करने और कतराकर मुंह फेरने

فَأَعْقَبَهُمْ نِفَاقًا ۖ فِي قُلُوبِهِمْ إِلَى يَوْمِ يَلْقَوْنَهُ ۚ بِمَا أَخْلَفُوا ۙ اللَّهُ مَا وَعَدُوهُ وَبِمَا كَانُوا ۙ يَكْذِبُونَ

फिर उनसे उनके खामयाजे (बदले) में अपनी मुलाकात के दिन (क़यामत) तक उनके दिल में (गोया खुद) निफाक डाल दिया इस वजह से उन लोगों ने जो खुदा से वायदा किया था उसके खिलाफ किया और इस वजह से कि झूठ बोला करते थे

أَلَمْ يَعْلَمُوا ۙ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ سِرَّهُمْ وَنَجْوَاهُمْ وَأَنَّ اللَّهَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ

क्या वह लोग इतना भी न जानते थे कि खुदा (उनके) सारे भेद और उनकी सरगोशी (सब कुछ) जानता है और ये कि ग़ैब की बातों से खूब आगाह है

الَّذِينَ يَلْمِزُونَ الْمُطَّوِّعِينَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ فِي الصَّدَقَاتِ وَالَّذِينَ لَا يَجِدُونَ إِلَّا جُهْدَهُمْ فَيَسْخَرُونَ مِنْهُمْ ۙ سَخِرَ اللَّهُ مِنْهُمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ

जो लोग दिल खोलकर ख़ैरात करने वाले मोमिनीन पर (रियाकारी का) और उन मोमिनीन पर जो सिर्फ अपनी शफ़क़वत (मेहनत) की मज़दूरी पाते (शेखी का) इल्ज़ाम लगाते हैं फिर उनसे मसख़रापन करते तो खुदा भी उन से मसख़रापन करेगा और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है

أَسْتَغْفِرُ لَهُمْ أَوْ لَا تَسْتَغْفِرُ لَهُمْ إِنْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ سَبْعِينَ مَرَّةً ۙ فَلَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَفَرُوا ۙ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ۚ ۙ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ

(ऐ रसूल) ख़्वाह तुम उन (मुनाफ़िकों) के लिए मग़फ़िरत की दुआ माँगों या उनके लिए मग़फ़िरत की दुआ न माँगों (उनके लिए बराबर है) तुम उनके लिए सत्तर बार भी बख़्शिश की दुआ माँगोगे तो भी खुदा उनको हरगिज़ न बख़्शेगा ये (सज़ा) इस सबब से है कि उन लोगों ने खुदा और उसके रसूल के साथ कुफ़्र किया और खुदा बदकार लोगों को मंज़िलें मकसूद तक नहीं पहुँचाया करता

فَرِحَ الْمُخَلَّفُونَ بِمَقْعَدِهِمْ خِلْفَ رَسُولِ اللَّهِ وَكَرِهُوا ۚ أَنْ يُجَاهِدُوا ۚ بِأَمْوَالِهِمْ
وَأَنْفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَقَالُوا ۚ لَا تَنْفِرُوا ۚ فِي الْحَرِّ ۚ قُلْ نَارُ جَهَنَّمَ أَشَدُّ
حَرًّا ۚ أَوْ لَوْ كَانُوا ۚ يَفْقَهُونَ

(जंगे तबूक में) रसूल ख़ुदा के पीछे रह जाने वाले अपनी जगह बैठ रहने (और जिहाद में न जाने) से खुश हुए और अपने माल और आपनी जानों से ख़ुदा की राह में जिहाद करना उनको मकरू मालूम हुआ और कहने लगे (इस) गर्मी में (घर से) न निकलो (ऐ रसूल) तुम कह दो कि जहन्नुम की आग (जिसमें तुम चलोगे उससे कहीं ज्यादा गर्म है

فَلْيَضْحَكُوا ۚ قَلِيلًا ۚ وَلْيَبْكُوا ۚ كَثِيرًا ۚ جَزَاءً ۚ بِمَا كَانُوا ۚ يَكْسِبُونَ

अगर वह कुछ समझें जो कुछ वह किया करते थे उसके बदले उन्हें चाहिए कि वह बहुत कम हँसें और बहुत रोएँ

فَإِنْ رَجَعَكَ اللَّهُ إِلَى طَائِفَةٍ ۚ مِنْهُمْ فَاسْتَدْنُوكَ لِالخُرُوجِ فَقُلْ لَنْ تَخْرُجُوا ۚ مَعِيَ
أَبَدًا ۚ وَلَنْ تُقَاتِلُوا ۚ مَعِيَ عَدُوًّا ۚ إِنَّكُمْ رَضِيتُمْ بِالْقُعُودِ أَوَّلَ مَرَّةٍ ۚ فَاقْعُدُوا ۚ مَعَ
الْخُلَفَاءِ

तो (ऐ रसूल) अगर ख़ुदा तुम इन मुनाफ़िक़ीन के किसी गिरोह की तरफ (जिहाद से सहीसालिम) वापस लाए फिर तुमसे (जिहाद के वास्ते) निकलने की इजाज़त माँगे तो तुम साफ़ कह दो कि तुम मेरे साथ (जिहाद के वास्ते) हरगिज़ न निकलने पाओगे और न हरगिज़ दुश्मन से मेरे साथ लड़ने पाओगे जब तुमने पहली मरतबा (घर में) बैठे रहना पसन्द किया तो (अब भी) पीछे रह जाने वालों के साथ (घर में) बैठे रहो

وَلَا تُصَلِّ عَلَى أَحَدٍ ۚ مِنْهُمْ مَاتَ أَبَدًا ۚ وَلَا تَقُمْ عَلَى قَبْرِهِ ۚ إِنَّهُمْ كَفَرُوا ۚ بِاللَّهِ
وَرَسُولِهِ ۚ وَمَاتُوا ۚ وَهُمْ فَسِقُونَ

और (ऐ रसूल) उन मुनाफ़िक़ीन में से जो मर जाए तो कभी ना किसी पर नमाज़े ज़नाज़ा पढ़ना और न उसकी क़ब्र पर (जाकर) खड़े होना इन लोगों ने यक़ीनन ख़ुदा और उसके रसूल के साथ कुफ़्र किया और बदकारी की हालत में मर (भी) गए

وَلَا تُعْجِبْكَ أَمْوَالُهُمْ وَأَوْلَادُهُمْ ۖ إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ أَنْ يُعَذِّبَهُمْ بِهَا فِي الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ أَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كَافِرُونَ

और उनके माल और उनकी औलाद (की कसरत) तुम्हें ताज्जुब (हैरत) में न डाले (क्योंकि) खुदा तो बस ये चाहता है कि दुनिया में भी उनके माल और औलाद की बदौलत उनको अज़ाब में मुब्तिला करे और उनकी जान निकालने लगे तो उस वक्त भी ये काफ़िर (के काफ़िर ही) रहें

وَإِذَا أَنْزَلَتْ سُورَةٌ أَنْ ءَامِنُوا بِاللَّهِ وَجَاهِدُوا ۖ مَعَ رَسُولِهِ اسْتَأْذَنَكَ أُو۟لُوا الطَّوْلِ مِنْهُمْ وَقَالُوا ۖ ذَرْنَا نَكُنْ مَعَ الْقُعْدِينَ

और जब कोई सूरा इस बारे में नाज़िल हुआ कि खुदा को मानों और उसके रसूल के साथ जिहाद करो तो जो उनमें से दौलत वाले हैं वह तुमसे इजाज़त मांगते हैं और कहते हैं कि हमें (यहीं छोड़ दीजिए) कि हम भी (घर बैठने वालों के साथ (बैठे) रहें

رَضُوا ۖ بِأَنْ يَكُونُوا ۖ مَعَ الْخَوَالِفِ وَطُبِعَ عَلَى قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُونَ

ये इस बात से खुश हैं कि पीछे रह जाने वालों (औरतों, बच्चों, बीमारों के साथ बैठे) रहें और (गोया) उनके दिल पर मोहर कर दी गई तो ये कुछ नहीं समझते

لَكِنَّ الرُّسُولَ وَالَّذِينَ ءَامَنُوا ۖ مَعَهُ ۖ جَاهِدُوا ۖ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ ۖ وَأُو۟لَئِكَ لَهُمُ الْخَيْرَاتُ ۖ وَأُو۟لَئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ

मगर रसूल और जो लोग उनके साथ ईमान लाए हैं उन लोगों ने अपने अपने माल और अपनी अपनी जानों से जिहाद किया- यही वह लोग हैं जिनके लिए (हर तरह की) भलाइयाँ हैं और यही लोग कामयाब होने वाले हैं

أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۖ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ

खुदा ने उनके वास्ते (बेहश्त) के वह (हरे भरे) बाग़ तैयार कर रखे हैं जिनके (दरख्तों के) नीचे नहरे जारी हैं (और ये) इसमें हमेशा रहेंगे यही तो बड़ी कामयाबी है

وَجَاءَ الْمُعَذِّرُونَ مِنَ الْأَعْرَابِ لِيُؤْذَنَ لَهُمْ وَقَعَدَ الَّذِينَ كَذَبُوا ۖ اللَّهُ وَرَسُولُهُ ۚ ۚ
سَيُصِيبُ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ مِنْهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۚ

और (तुम्हारे पास) कुछ हीला करने वाले गवार देहाती (भी) आ मौजूद हुए ताकि उनको भी (पीछे रह जाने की) इजाजत दी जाए और जिन लोगों ने खुदा और उसके रसूल से झूठ कहा था वह (घर में) बैठ रहे (आए तक नहीं) उनमें से जिन लोगों ने कुफ्र एख्तियार किया अनकरीब ही उन पर दर्दनाक अज़ाब आ पहुँचेगा

لَيْسَ عَلَى الضُّعَفَاءِ وَلَا عَلَى الْمَرْضَى وَلَا عَلَى الَّذِينَ لَا يَجِدُونَ مَا يَنْفِقُونَ حَرَجٌ
إِذَا نَصَحُوا ۚ لِلَّهِ وَرَسُولِهِ ۚ ۚ مَا عَلَى الْمُحْسِنِينَ مِنْ سَبِيلٍ ۚ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ
رَحِيمٌ ۚ

(ऐ रसूल जिहाद में न जाने का) न तो कमज़ोरों पर कुछ गुनाह है न बीमारों पर और न उन लोगों पर जो कुछ नहीं पाते कि खर्च करें बशर्ते कि ये लोग खुदा और उसके रसूल की खैर ख्वाही करें नेकी करने वालों पर (इल्ज़ाम की) कोई सबील नहीं और खुदा बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है

وَلَا عَلَى الَّذِينَ إِذَا مَا أَتَوْكَ لِتَحْمِلَهُمْ قُلْتَ لَا أَجِدُ مَا أَحْمِلُكُمْ عَلَيْهِ تَوَلَّوْا ۚ وَأَعْيُنُهُمْ
تَفِيزُ مِنَ الدَّمْعِ حَزَنًا أَلَّا يَجِدُوا ۚ ۚ مَا يَنْفِقُونَ

और न उन्हीं लोगों पर कोई इल्ज़ाम है जो तुम्हारे पास आए कि तुम उनके लिए सवारी बाहम पहुँचा दो और तुमने कहा कि मेरे पास (तो कोई सवारी) मौजूद नहीं कि तुमको उस पर सवार करूँ तो वह लोग (मजबूरन) फिर गए और हसरत (व अफसोस) उसे उस ग़म में कि उन को खर्च मयस्सर न आया